सर्वार्थसिद्धिः (फोल्डर नं. ∞१४४३)

आचार्य पूज्यपाद विरचित

सम्पादक एवं अनुवादक – पं. फूलचन्द्र शास्त्री

मुख्य टाइटल

प्राथमिक

सम्पादकीय

दो शब्द

प्रस्तावना

विषयानुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

मंगलाचरण ---------- १

तत्त्वार्थसूत्रकी उत्थानिका ---------- १

आत्माका हित मोक्ष है यह बतलाते हुए मोक्षका स्वरूप निर्देश ---------- १

विभिन्न प्रवादियोंके द्वारा माने गये मोक्षके स्वरूपका उद्भावन और निराकरण ---------- १

मोक्षप्राप्तिके उपायमें विभइन्न प्रवादियोंका विसंवाद और... ----------२

मोक्षमार्गका स्वरूप निर्देश ---------- ४

सम्यक् शब्दकी निरुक्ति... ---------- ४

दर्शन, ज्ञान और चारित्रकी निरुक्ति ---------- ४

कर्त्ता और करणके एक होने की आपत्तिका परिहार ---------- ५

सूत्रमें सर्वप्रथम दर्शन, अनन्तर ज्ञान और सबके अन्तमें चारित्र शब्द रखने का समर्थन -------- ५

मार्गः इस प्रकार एकवचन निर्देशकी सार्थकका ---------- ५

सम्यग्दर्शनका लक्षण-निर्देश ---------- ६

तत्त्व शब्द की निरुक्ति ---------- ६

अर्थ शब्द की निरुक्ति ---------- ६

तत्त्वार्थकी निरुक्ति पूर्वक सम्यग्दर्शनका स्वरूप ---------- ६

दृश धातुका अर्थ आलोक है फिर श्रद्धान अर्थ कैसे संभव है... ---------- ७

अर्थ-श्रद्धान या तत्त्व-श्रद्धानको सम्यग्दर्शनका लक्षण मानने पर.... ---------- ७

सम्यग्दर्शन सराग और वीतराग इन दो भेदोंका स्वरूप ---------- ७

विशेषार्थ द्वारा प्रकृत विषय का स्पष्टीकरण ----------८

सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति के दो प्रकार ---------- ९

निसर्ग और अधिगम शब्दका अर्थ ---------- ९

निसर्गज सम्यग्दर्शनमें अर्थाधिगम होता है या नहीं... ---------- ९

तन्निसर्गादधिगमाद्वा इस सूत्रमें आये हुए तत् पद की सार्थकता ---------- १०

सात तत्त्वोंका नाम निर्देश ---------- ११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सातों तत्त्वोंके स्वरूपका प्रतिपादन कर..... ---------- ११
भाववाची तत्त्व शब्दका द्रव्यवाचक जीवादि पदोंके साथ समानाधिकरणका विचार... ----------१२
नामादि चार निक्षेपोंका प्रतिपादन ----------१३
नामादि चारों निक्षेपोंका स्वरूप ----------१३
चारों निक्षेपोंके द्वारा जीवतत्त्वका निरूपण ----------१३
नामादि निक्षेपविधिकी उपयोगिता ---------- १४
नामस्थापना सूत्रमें प्रयुक्त हुए तत् पदकी सार्थकता ---------- १४
विशेषार्थ-द्वारा निक्षेप-विषयक स्पष्टीकरण ---------- १४
प्रमाण और नयका निर्देश---------- १४
प्रमाणके स्वार्थ और परार्थ ये दो भेद तथा उनका स्वरूप ---------- १५
सूत्रमें नयपदके पूर्व प्रमाण पद रखनेका कारण ---------- १५
नयका स्वरूप, सकलादेश और विकलादेशका निर्देश ---------- १६
नयके मूल भेदोंका स्वरूपनिरूपण व उनका विषय ---------- १६
जीवादि तत्त्वोंके अधिगमके उपायभूत छह अनुयोगद्वारोंका निरूपण ---------- १६
निर्देश, स्वामित्वादि छहों अनुयोगद्वारोंका स्वरूप ---------- १६
निर्देश अनुयोगद्वारसे सम्यग्दर्शनका निरूपण ---------- १६
सम्यग्दर्शनके स्वामित्वका सामान्यसे निरूपण ---------- १६
सम्यग्दर्शनके स्वामित्वका विशेषकी अपेक्षा.... ---------- १६
इन्द्रियमार्गणाके द्वारा सम्यग्दर्शनके स्वामित्वका वर्णन ---------- १७
कायादि शेष मार्गणाओंके द्वारा सम्यग्दर्शनके स्वामित्वका निरूपण ----------१८
सम्यग्दर्शनके अभ्यन्तर और बाह्य साधनोंका प्रतिपादन ---------- १९
सम्यग्दर्शनके अभ्यन्तर और बाह्य अधिकरणका निरूपण ---------- २०
सम्यग्दर्शनके औपशमिकादि भेदोंकी स्थिति का प्ररूपण ---------- २०
विधान-अनुयोगकी अपेक्षा सम्यग्दर्शनके भेदोंका प्रतिपादन ----------२१
तत्त्वाधिगमके उपायभूतसत् संख्यादि आठ अनुयोगद्वारोंका निरूपण ----------२१
सत् संख्यादि आठों अनुयोगोंका स्वरूप ----------२१
निर्देश व स्वामित्वादिसे सत् संख्यादिको पृथक् कहनेका कारण ---------- २२
सत्प्ररूपणा ---------- २२-२४
सत् अनुयोगद्वारकी अपेक्षा जीव तत्त्वका निरूपण ---------- २२
जीव तत्त्वके विशेष-परिज्ञानके लिए चौदह मार्गणाओं का प्रतिपादन ---------- २२
सत्प्ररूपणाके सामान्य और विशेष भेदोंके द्वारा जीव तत्त्वका निरूपण ---------- २२
चौदह मार्गणाओंमें संभव गुणस्थानोंका प्ररूपण ---------- २३
संख्या-प्ररूपण ---------- २४-२९
चौदह गुणस्थानोंकी अपेक्षा जीव संख्याका निरूपण ---------- २४
गतिमार्गणाकी अपेक्षा चारों गतियोंमें संख्याका निरूपण ---------- २४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इन्द्रियमार्गणाकी अपेक्षा जीवसंख्याका निरूपण ---------- २६
कायमार्गणाकी अपेक्षा जीवसंख्याका निरूपण ---------- २६
योगमार्गणाकी अपेक्षा जीवसंख्याका निरूपण ---------- २६
वेदमार्गणाकी अपेक्षा जीवसंख्याका निरूपण ---------- २६
कषायमार्गणाकी अपेक्षा जीवसंख्याका निरूपण ---------- २७
ज्ञानमार्गणाकी अपेक्षा जीवसंख्याका निरूपण ---------- २७
संयम मार्गणाकी अपेक्षा जीवसंख्याका निरूपण ---------- २८
दर्शनमार्गणाकी अपेक्षा जीवसंख्याका निरूपण ---------- २८
लेश्यामार्गणाकी अपेक्षा जीवसंख्याका निरूपण ---------- २८
भव्यमार्गणाकी अपेक्षा जीवसंख्याका निरूपण ---------- २८
सम्यक्त्वमार्गणाकी अपेक्षा जीवसंख्याका निरूपण ---------- २९
संज्ञिमार्गणाकी अपेक्षा जीवसंख्याका निरूपण ---------- २९
आहारमार्गणाकी अपेक्षा जीवसंख्याका निरूपण ---------- २९
क्षेत्रप्ररूपणा ---------- २९-३२
सामान्यसे जीवोंके क्षेत्रका निरूपण ---------- २९
गतिमार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके क्षेत्रका निरूपण ---------- ३०
इन्द्रिय मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके क्षेत्रका निरूपण ---------- ३०
काय मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके क्षेत्रका निरूपण ---------- ३०
योग मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके क्षेत्रका निरूपण ---------- ३०
वेद मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके क्षेत्रका निरूपण ---------- ३०
कषाय मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके क्षेत्रका निरूपण ---------- ३०
ज्ञान मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके क्षेत्रका निरूपण ----------३१
संयम मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके क्षेत्रका निरूपण ----------३१
दर्शन मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके क्षेत्रका निरूपण----------३१
लेश्या मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके क्षेत्रका निरूपण ----------३१
भव्य मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके क्षेत्रका निरूपण ----------३१
सम्यक्त्व मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके क्षेत्रका निरूपण ---------- ३२
संज्ञि मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके क्षेत्रका निरूपण ---------- ३२
आहार मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके क्षेत्रका निरूपण ---------- ३२
विशेषार्थके द्वारा क्षेत्रप्ररूपणाका स्पष्टीकरण ---------- ३२
स्पर्शना प्ररूपणा ---------- ३३-३९
गुणस्थानोंकी अपेक्षा जीवोंके स्पर्शनाका निरूपण ---------- ३३
गतिमार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके स्पर्शनाका निरूपण ---------- ३४
इन्द्रिय मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके स्पर्शनाका निरूपण ---------- ३५
काय मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके स्पर्शनाका निरूपण ---------- ३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

योग मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके स्पर्शनाका निरूपण ---------- ३५
वेद मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके स्पर्शनाका निरूपण ---------- ३६
कषाय मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके स्पर्शनाका निरूपण ---------- ३७
ज्ञान मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके स्पर्शनाका निरूपण---------- ३७
संयम मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके स्पर्शनाका निरूपण ---------- ३७
दर्शन मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके स्पर्शनाका निरूपण ---------- ३७
लेश्या मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके स्पर्शनाका निरूपण ---------- ३७
भव्य मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके स्पर्शनाका निरूपण ---------- ३९
सम्यक्त्व मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके स्पर्शनाका निरूपण ---------- ३९
संज्ञि मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके स्पर्शनाका निरूपण ---------- ३९
आहार मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके स्पर्शनाका निरूपण ---------- ३९
काल प्ररूपणा ---------- ३९-४७
गुणस्थानोंकी अपेक्षा जीवोंके कालका वर्णन ---------- ३९
गतिमार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके कालका वर्णन ---------- ४०
इन्द्रिय मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके कालका वर्णन ---------- ४२
काय मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके कालका वर्णन ---------- ४२
योग मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके कालका वर्णन ---------- ४२
वेद मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके कालका वर्णन ---------- ४३
कषाय मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके कालका वर्णन ---------- ४४
ज्ञान मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके कालका वर्णन ---------- ४४
संयम मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके कालका वर्णन ---------- ४४
दर्शन मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके कालका वर्णन ---------- ४४
लेश्या मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके कालका वर्णन ---------- ४५
भव्य मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके कालका वर्णन ---------- ४६
सम्यक्त्व मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके कालका वर्णन ---------- ४६
संज्ञि मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके कालका वर्णन ---------- ४६
आहार मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंके कालका वर्णन ---------- ४७
अन्तर-प्ररूपणा ---------- ४७-६०
चौदह गुणस्थानोंममें जीवोंका अन्तर कथन ---------- ४७
गतिमार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अन्तर कथन ---------- ४८
इन्द्रिय मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अन्तर कथन ---------- ५०
काय मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अन्तर कथन---------- ५१
योग मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अन्तर कथन ---------- ५२
वेद मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अन्तर कथन ---------- ५२
कषाय मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अन्तर कथन ---------- ५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञान मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अन्तर कथन---------- ५४
संयम मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अन्तर कथन---------- ५५
दर्शन मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अन्तर कथन ---------- ५६
लेश्या मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अन्तर कथन---------- ५७
भव्य मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अन्तर कथन ---------- ५७
सम्यक्त्व मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अन्तर कथन ---------- ५८
संज्ञि मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अन्तर कथन ---------- ५९
आहार मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अन्तर कथन ---------- ६०
भाव-प्ररूपणा ---------- ६०-६३
चौदह गुणस्थानोंमें जीवोंका भावप्ररूपण ---------- ६०
गतिमार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका भावप्ररूपण ---------- ६१
इन्द्रिय मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका भावप्ररूपण ---------- ६१
काय मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका भावप्ररूपण ---------- ६१
योग मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका भावप्ररूपण ---------- ६१
वेद मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका भावप्ररूपण ---------- ६२
कषाय मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका भावप्ररूपण ---------- ६२
संयम मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका भावप्ररूपण ---------- ६२
दर्शन मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका भावप्ररूपण ---------- ६२
लेश्या मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका भावप्ररूपण ---------- ६२
भव्य मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका भावप्ररूपण ---------- ६२
सम्यक्त्व मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका भावप्ररूपण ---------- ६२
संज्ञि मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका भावप्ररूपण ---------- ६३
आहार मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका भावप्ररूपण ---------- ६३
अल्पबहुत्व प्ररूपणा---------- ६३
चौदह गुणस्थानोंमें जीवोंका अल्पबहुत्व प्ररूपण ---------- ६३
गतिमार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अल्पबहुत्व-प्ररूपण ---------- ६४
इन्द्रिय मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अल्पबहुत्व-प्ररूपण ---------- ६४
काय मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अल्पबहुत्व-प्ररूपण ---------- ६४
योग मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अल्पबहुत्व-प्ररूपण---------- ६४
वेद मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अल्पबहुत्व-प्ररूपण ---------- ६४
कषाय मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अल्पबहुत्व-प्ररूपण ---------- ६४
ज्ञान मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अल्पबहुत्व-प्ररूपण ---------- ६५
संयम मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अल्पबहुत्व-प्ररूपण ---------- ६५
दर्शन मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अल्पबहुत्व-प्ररूपण ---------- ६५
लेश्या मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अल्पबहुत्व-प्ररूपण ---------- ६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भव्य मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अल्पबहुत्व-प्ररूपण ---------- ६६
सम्यक्त्व मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अल्पबहुत्व-प्ररूपण ---------- ६६
संज्ञि मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अल्पबहुत्व-प्ररूपण ---------- ६६
आहार मार्गणाकी अपेक्षा जीवोंका अल्पबहुत्व-प्ररूपण ---------- ६७
सम्यग्ज्ञानके पाँच भेद ---------- ६७
सम्यग्ज्ञानके पाँच भेदोंका स्वरूप ---------- ६७
मतिज्ञानादिक्रमसे पाठ रखनेका कारण ---------- ६८
वे पाँचों ज्ञान दो प्रमाणरूप हैं इस बातका निर्देश ---------- ६९
सन्निकर्ष और इन्द्रयकी प्रमाणताका निराकरण ---------- ६९
ज्ञानके फलका निरूपण ---------- ६९
विशेषार्थ द्वारा सन्निकर्ष और इन्द्रियको प्रमाण.... ---------- ७०
परोक्षज्ञानका प्रतिपादन ---------- ७१
परोक्षका स्वरूप ---------- ७२
प्रत्यक्षज्ञानका प्रतिपादन ---------- ७३
प्रत्यक्षका स्वरूप ---------- ७३
विभंगज्ञानकी प्रमामताका निराकरण ---------- ७३
इन्द्रिय-व्यापारजनित ज्ञानको प्रत्यक्ष माननेमें दोष---------- ७४
मतिज्ञानके पर्यायवाची नामोंका प्रतिपादन मति.... ---------- ७६
मतिज्ञानकी उत्पत्तिका निमित्त ---------- ७७
इन्द्रिय और अनिन्द्रियका स्वरूप ---------- ७७
तत् पदकी सार्थकता ---------- ७८
मतिज्ञानके भेद ---------- ७९
अवग्रह आदिका स्वरूप ---------- ७९
अवग्रहादिके विषयभूत पदार्थोंके भेद ---------- ८०
बहुआदिका स्वरूप ---------- ८०
बहु और बहुविधमें अन्तर---------- ८०
उक्त और निःसृतमें अन्तर ----------८१
क्षप्रनिःसृत पाठान्तरकी सूचना और उसका अर्थ ----------८१
ध्रुवावग्रह और धारणामें भेद ----------८१
बहु आदि अर्थके अवग्रह आदि होते हैं ---------- ८२
अर्थ पददेनेकी सार्थकता ---------- ८२
व्यञ्जन शब्दका अर्थ ---------- ८३
व्यञ्जनावग्रह और अर्थावग्रहमें भेद ---------- ८३
व्यञ्जनावग्रह चक्षु और मनसे नहीं होता ---------- ८३
आगम और युक्तिसे चक्षु और मनकी अप्राप्यकारिताकी सिद्धि ---------- ८४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रुतज्ञानका स्वरूप और उसके भेद ---------- ८५
मतपूर्वक श्रुतज्ञानके माननेमें आनेवाली आपत्तियोंका परिहार ---------- ८५
श्रुत नयभेदसे कथंचित् अनादिनिधन और कथंचित् सादि है ---------- ८६
श्रुतपूर्वक भी श्रुतज्ञान उत्पन्न होता है इस आशंकाका समाधान ---------- ८६
श्रुतके भेद व उनका कारण ---------- ८७
विशेषार्थ द्वारा श्रुतज्ञानका स्पष्टीकरण ---------- ८७
भवप्रत्यय अवधिज्ञानके स्वामी ---------- ८८
भवप्रत्यय कहनेका कारण ---------- ८९
क्षयोपशम निमित्तक अवधिज्ञानके स्वामी ---------- ८९
अवधिज्ञानके छह भेद व उनका स्वरूप ---------- ९०
मनःपर्ययज्ञानके भेद और स्वरूप ---------- ९१
इन दोनों ज्ञानोंका क्षेत्र और कालकी अपेक्षा विषय ---------- ९२
ऋजुमति और विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानमें अन्तर ---------- ९२
विशुद्धि और अप्रतिपातका अर्थ ---------- ९२
विशुद्धि और अप्रतिपातके द्वारा दोनों ज्ञानोंमें अन्तरका विशेष कथन ---------- ९३
अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञानमें विशेषता ---------- ९४
विशुद्धि आदिके द्वारा दोनों ज्ञानों में अन्तरका विशेष स्पष्टीकरण ---------- ९४
मतिज्ञान और श्रुतज्ञानका विषय ---------- ९४
मतिज्ञानकी अरूपी द्रव्यों में मनसे प्रवृत्ति होती है ---------- ९५
अवधिज्ञानका विषय ---------- ९५
मनःपर्ययज्ञानका विषय ---------- ९५
केवलज्ञानका विषय ---------- ९६
एक जीवमें एक साथ संभव ज्ञानोंका निरूपण---------- ९७
मिथ्याज्ञानोंका निरूपण ---------- ९८
मिथ्याज्ञानके कारणोंका निरूपण ---------- ९८
कारण विपरह्यास भेदाभेदविपर्यास और स्वरूविपर्यासका वर्णन---------- ९८
नयोंके भेद ---------- १००
नयका स्वरूप ---------- १००
नैगमनयका स्वरूप ---------- १००
संग्रहनयका स्वरूप ---------- १०१
व्यवहारनयका स्वरुप ---------- १०१
ऋजुसूत्रनयका स्वरुप ---------- १०२
शब्दनयका स्वरुप ---------- १०२
समभिरूढनयका स्वरुप ---------- १०३
एवम्भूतनयका स्वरुप ---------- १०३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय की सूक्ष्मता ---------- १०४
विशेषार्थ द्वारा नयोंका स्पष्टीकरण---------- १०४
दूसरा अध्याय
जीवके असाधारण भावोंका निरुपण ---------- १०७
उपशम आदि का अर्थ ---------- १०७
औपशनिकादि भावोंके क्रमकी सार्थकता ---------- १०७
भावोंके भेदोंकी संख्या ---------- १०८
द्विनवाष्टादिपदका भेद शब्दके साथ दो प्रकारका समास ---------- १०८
औपशमिक भाव के दो भेद ---------- १०९
औपशमिक सम्यकत्व किस प्रकार उत्पन्न होता हैं ---------- १०९
काललब्धिका वर्णन ---------- १०९
औपशमिकचारित्र किस प्रकार उत्पन्न होता हैं ---------- ११०
क्षायिकभावके नौ भेद---------- ११०
नौ क्षायिक भावोंका स्वरुप व उनका कार्य ---------- ११०
क्षायिक दानादि कृत अभयदानादि सिद्धोंके क्यों नहीं होते इसका कारण ---------- १११
क्षायोपशमिक भावके अठारह बेद ---------- ११४
औदयिक भावके भेदों का स्वरूप ---------- ११४
उपशान्तकषाय आदिमें शुक्ललेश्या किस प्रकार मानी गयी है इसका निर्देश ---------- ११५
परिणामिक भावके तीन भेद ---------- ११५
अस्तित्वादि अन्य भी पारिणामिक भाव हैं फिर.... ---------- ११५
विशेषार्थ द्वारा पारिणामिक भावों का खुलासा ---------- ११६
जीवका लक्षण ---------- ११६
उपयोगका स्वरूप---------- ११७
उपयोग के भेद-प्रभेद ---------- ११७
उपयोग के भेदोंका स्वरूप व प्रवृत्तिक्रमका निर्देश ---------- ११७
जीवोंके भेद ----------११८
संसार शब्द का अर्थ ---------- ११९
द्रव्यपरिवर्तनका स्वरूप ---------- ११९
क्षेत्र परिवर्तनका स्वरूप ---------- ११९
काल परिवर्तनका स्वरूप ---------- १२०
भव परिवर्तनका स्वरूप ---------- १२०
भाव परिवर्तनका स्वरूप ----------१२१
संसारी जीवोंके भेद ---------- १२३
मन के दो भेद तथा समनस्क और अमनस्क शब्दका अर्थ ---------- १२३
संसारी जीवोंके प्रकारान्तरसे भेद ---------- १२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्रमें संसारी पद देनेकी सार्थकता ---------- १२३
त्रस और स्थावर शब्दका आगमिक अर्थ ---------- १२४
स्थावर जीवोंके भेद ---------- १२४
स्थावर शब्द का अर्थ ---------- १२४
पृथिवी, पृथिवीकाय, पृथिवीकायिक और पृथिवीजीवका स्वरूप ---------- १२४
स्थावर जीवोंके प्राण ---------- १२४
त्रस जीवोंके बेद ---------- १२५
द्वीन्द्रिय आदि शब्दों का अर्थ ---------- १२५
द्वीन्द्रिय आदि जीवोंके प्राण ---------- १२५
इन्द्रियोंकी संख्या---------- १२६
इन्द्रियोंमें कर्मेन्द्रियोंका ग्रहण नहीं होता ---------- १२७
इन्द्रियोंके दो भेद ---------- १२७
द्रव्येन्द्रियके दो भेद ---------- १२७
निर्वृति और उपकरणका अर्थ व उनके भेद ---------- १२७
भावेन्द्रियके दो भेद ---------- १२७
लब्धि और उपयोग का अर्थ ---------- १२७
उपयगको इन्द्रिय कहनेका कारण ---------- १२८
पाँच इन्द्रियोंके विषय ---------- १२९
कर्मसाधन और भावसाधन द्वारा स्पर्शादिकी सिद्धि ---------- १२९
मनका विषय ---------- १३०
श्रुत शब्द के दो अर्थ ---------- १३०
वनस्पति पर्यन्त जीवोंके एक इन्द्रिय होती है ---------- १३०
स्पर्श इन्द्रियकी उत्पत्तिका कारण ----------१३१
कृमि आदि जीवोंके दो आदि इन्द्रियाँ होती हैं ----------१३१
किस क्रमसे इन्द्रियाँ बढ़ी हैं उनका नामनिर्देश ----------१३१
संज्ञी जीवोंका स्वरूप ---------- १३२
समनस्क पद देने की सार्थखता ---------- १३२
विग्रह गतिमें जीव की गति का कारण ---------- १३२
विग्रह कर्म व योग शब्दका अर्थ ---------- १३३
गतिका नियम ---------- १३३
श्रेणि शब्दका अर्थ ---------- १३३
गतिपदकी सार्थकता ---------- १३४
काल औऱ देशनियम का विधान---------- १३४
विग्रह शब्दका अर्थ ---------- १३४
अविग्रहा जीवस्य सूत्रकी सार्थकता ---------- १३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संसारी जीवकी गति का नियम और समय ---------- १३४
निष्कुटक्षेत्रसे मरकर निष्कुटक्षेत्र में उत्पन्न होनेवाले जीवकी तिविग्रह गति ---------- १३५
अविग्रहवाली गति का समय निर्देश ---------- १३५
अनाहारक जीवोंका समय-निर्देश ---------- १३५
आहार शब्दका अर्थ ---------- १३६
जन्मके भेद ---------- १३६
सम्मूर्च्छन, गर्भ और उपपाद पदका अर्थ ---------- १३६
चौरासी लाख योनियाँ किसके कितनी होती हैं ---------- १३६
योनियोंके भेद ---------- १३६
सचित्त आदि पदों का अर्थ ---------- १३६
तत् पदकी सार्थकता ---------- १३७
योनि और जन्ममें अन्तर ---------- १३७
किस जीवके कौन योनि होती है इसका खुलासा---------- १३७
गर्भ जन्म के स्वामी ---------- १३८
जरायु आदि पदों का अर्थ ---------- १३८
उपपाद जन्मकेस्वामी ---------- १३८
सम्मूर्च्छन जन्मके स्वामी ---------- १३९
जन्मके भूस्वामियोंके प्रतिपादक तीनों सूत्र नियमार्थक हैं ---------- १३९
शरीरके पांच बेद ---------- १३९
औदारिक आदि पदोंका अर्थ ---------- १३९
शरीरोंमें उत्तरोत्तर सूक्ष्मता ---------- १४०
तैजससे पूर्व तीन शरीर उत्तरोत्तर प्रदेशोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणे हैं ---------- १४०
गुणकारका प्रमाण ---------- १४०
अन्तके दो शरीर अनन्तगुणे हैं ---------- १४१
तैजस और कार्मण शरीरकी अप्रतीघातता ---------- १४१
प्रतीघात पद का अर्थ ---------- १४१
वैक्रियिक और आहारक शरीरकी अप्रतीघात क्यों नहीं कहा ---------- १४१
तैजस और कार्मणका अनादिसम्बन्ध ---------- १४१
च पदकी सार्थकता ---------- १४१
तैजस और कार्मणके स्वामी ---------- १४२
एक जीवके एक साथ लभ्य शरीरोंकी संख्या ---------- १४२
कार्मण शरीरकी निरुपभोगता ---------- १४३
उपभोग पदका अर्थ ---------- १४३
तैजस शरीर भी निरुपभोग हैफिर उसका ग्रहण क्यों नहीं किया---------- १४३
औदारिक शरीर किस किस जन्मसे होता है ---------- १४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वैक्रियिक शरीर किस जन्मसे होता है ---------- १४४
वैक्रियिक शरीर लब्धिप्रत्यय भी होता है ---------- १४४
तैजसशरीर लब्धिप्रत्यय होता है ---------- १४४
आहारकशरीरकी विशेषता और स्वामी ---------- १४५
शुभ आदि पदोंका अर्थ---------- १४५
आहारकशरीरकी उत्पत्तिका प्रयोजन ---------- १४५
नारक और सम्मूर्च्छिनोंके वेद का वर्णन---------- १४६
नारक शब्द का अर्थ ---------- १४६
देवों के वेद का वर्णन ---------- १४६
शेष जीवोंके वेद का वर्णन ---------- १४७
लिंग के दो भेद व उनका अर्थ ---------- १४७
स्त्री आदि शब्दोंको व्युत्पत्ति ---------- १४७
अनपवर्त्यायुष्क जीवोंका निरूपण---------- १४७
औपपादिक आदि पदोंका अर्थ ---------- १४८
पाठान्तरका निर्देश ---------- १४८

तीसरा अध्याय

नरककी सात भूमियाँ व उनका आधार ---------- १५०
रत्नप्रभा आदि नामोंकी सार्थकता---------- १५०
भूमि पदकी सार्थखता---------- १५१
भूमि, तीन वातवलय और आकाश इनमें आधार-आधेयभाव ---------- १५१
विसेषार्थ द्वारा अधोलोकका स्पष्टीकरण ---------- १५१
भूमियोंमें नरकों (विलों) की संख्या ---------- १५२
भूमियोंमें नरक प्रस्तारोंका विचा ---------- १५२
नारक निरन्तर अशउभतरलेश्या आदिवाले होते हैं इसका विचार ---------- १५३
नित्य शब्द का अर्थ ---------- १५३
किस भूमिमें कौन लेश्या है इसका विचार ---------- १५३
द्रव्यलेश्या और भावलेश्याका काल ---------- १५३
नारकियोंके देहका विचार व देहकी ऊँचाई ---------- १५३
नारकियोंके तीव्र वेदनाका कारण ---------- १५३
नारकोंमें उष्णता व शीतताका विचार ---------- १५३
नारकी स्वभावसे अशुभ विक्रिया रकते हैं और अशुभ निमित्त जोड़ते हैं ---------- १५३
नारकी आपसमें दुःखके कारण होते हैं ---------- १५४
परस्पर दुःख उत्पन्न करनेके कारणों का निर्देश ---------- १५४
नारकियोंकी विक्रियासे ही तलवार, बरछी आदि बनते हैं ---------- १५४
तीसरी भूमि तक असुरोंके निमित्तसे दुःख की उत्पत्ति ---------- १५४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असुर शब्दका अर्थ ---------- १५५
असुरोंके संक्लिष्ट विशेषणकी सार्थकता ---------- १५५
कुछ अम्बावरीष आदि देव ही दुःखमें निमित्त होते हैं इसका निर्देश ---------- १५५
सूत्रमें आये हुए च पदकी सार्थकता ---------- १५५
नारकियोंके अकालमरण न होनेका कारण ---------- १५५
नारकियोंकी उत्कृष्ट आयु ---------- १५५
सत्त्वानाम् पदकी सार्थखता ---------- १५६
तिर्यग्लोक पदका अर्थ ---------- १५६
द्वीपों और समुद्रोंके मुख्य-मुख्य नामोकंा निर्देश ---------- १५६
द्वीपों और समुद्रोंके अनेक नामों का निर्देश ---------- १५६
द्वीपों और समुद्रोंका विष्कम्भ और आकृति ---------- १५७
सूत्रमें आये हुए प्रत्येक पदकी सार्थखता ---------- १५७
जम्बूद्वीपका सन्निवेश और व्यास ---------- १५७
जम्बूद्वीप नाम पड़नेका कारण ---------- १५७
जम्बूवृक्षकी अवस्थिति कहाँ हैं और वह किस रूप है इसका विचार ---------- १५७
विशेषार्थ द्वारा मध्यलोक और सुमेरु पर्वत का वर्णन ---------- १५७
सात क्षेत्रोंकी संज्ञा ---------- १५८
भरत आदि संज्ञाएँ अनिमित्तक और अनादि हैं ---------- १५८
कौन क्षेत्र कहाँ पर है इसका विचार ---------- १५८
सात क्षेत्रोंका विभाग करनेवाले छह कुलाचल पर्वत ---------- १५९
ये पर्वत कहाँ से कहाँ तक फैले हुए हैं ---------- १५९
हिमदान् आदि नाम अनिमित्तक और अनादि हैं ---------- १५९
हिमवान् आदिको वर्षधर पर्वत कहने का कारण ---------- १५९
कौन पर्वत कहाँसे कहाँ तक अवस्थित हैं व उनकी ऊँचाई और अवगाह क्या है इसका विचार ---------- १५९
पर्वतोंका रंग ---------- १६०
पर्वतोंकी विशेषा व विस्तार ---------- १६०
च पद की सार्थखता ---------- १६०
पर्वतोंपर तालाब ---------- १६०
प्रथम तालाबका आयम व विस्तार ---------- १६१
प्रथम तालाबका अवगाह ---------- १६१
प्रथम तालाबके कमलका प्रमाण ---------- १६१
प्रथम तालाबमें कमलके अवयवोंका प्रमाण व जलतलसे कमलकी ऊँचाईका प्रमाण ---------- १६१
अन्य तालाब व कमलोंका प्रमाण ---------- १६१
कमलोंमें निवास करनेवाली छह देवियों व उनका परिवार और आयु ---------- १६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कमलोंकी कर्णिकाके बीचमें बने हुए प्रासादों का प्रमाण व रंग ---------- १६२
मुख्य कमलोंके परिवार, कमलोंमें रहनेवाले अन्य देव ---------- १६२
पूर्वोक्त क्षेत्रोंमें बनहेवीला चौदह नदियाँ ---------- १६२
पूर्व समुद्रकी जानेवाली नदियाँ ---------- १६३
पश्चिम समुद्रको जानेवाली नदियाँ ---------- १६३
कौन नदी किस तालाबके किस ओरके द्वारसे निकली है इसका विचार ---------- १६३
गंगा और सिनधु दोनों पदोंके रखने की सार्थकता ---------- १६४
भरतक्षेत्रका विस्तार ---------- १६४
विदेह पर्यन्त आगेके पर्वतों व क्षेत्रोंका विस्तार ---------- १६५
उत्तरके क्षेत्र व पर्वतोंके विस्तारका प्रमाण ---------- १६५
भरत और ऐरावत क्षेत्रमें कालकृत परिवर्तन ---------- १६५
यह परिवर्तन क्षेत्रका न होकर वहाँके जीवों का होता है ---------- १६५
यह परिवर्तन अनुभव, आयु और प्रमाणादि कृत होता है---------- १६६
अनुभव आदि शब्दोंका अर्थ ---------- १६६
कालके दो भेद और इनमेंसे प्रत्येकके छह छह भेद ---------- १६६
कालके दोनों भेदोंकी कल्प संज्ञा ---------- १६६
सुषमासुषमा आदि कालोंका प्रमाण आदि ---------- १६६
शेष भूमियाँ अवस्थित हैं ---------- १६७
हेमवतक आदि मनुष्योंकी आयु ---------- १६७
हेमवत आदि क्षेत्रोंमें कौनसा काल प्रवर्तता है.... ---------- १६७
दक्षिणके क्षेत्रोंके समान उत्तरके क्षेत्रोंका वर्णन ---------- १६८
विदेहमें कालका प्रमाण ---------- १६८
विदेहमें काल, मनुष्योंकी ऊँचाई, आहार और आयुका विचार ---------- १६८
पूर्वका प्रमाण---------- १६८
भरतक्षेत्रके विष्कम्भका सोपपत्ति विचार ---------- १६८
जम्बूद्वीपके वाद कौनसा द्वीप है इसका निर्देश ---------- १६९
घातकीखण्ड द्वीपके क्षेत्रादिका विचार ---------- १६९
घातकीखण्डको दक्षिण और उत्तर इन दो भागोंमें विभाजित करनेवाले दो इष्वाकार पर्वत ------ १६९
घातकीखण्ड-द्वीपमें दो मेरु ---------- १६९
घातकी खण्ड द्वीपमें दो दो भरतादि क्षेत्र और दो दो हिमवान् आदि ---------- १६९
धातकी खण्ड द्वीपमें क्षेत्रों व पर्वतोंका संस्थान व विष्कम्भ ---------- १६९
धातकीखण्ड द्वीपमें सपरिवार धाततकीवृक्ष ---------- १६९
धातकीखण्ड द्वीपके बाद कालोद समुद्र व उसका विस्तार ---------- १६९
पुष्करार्धमें इष्वाकार पर्वत व पुष्कर वृक्ष ादिका निर्देश ---------- १७०
पुष्करार्ध संज्ञाका करण ---------- १७०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मानुषोत्तर पर्वतके पहले मनुष्य हैं ---------- १७०
मानुषोत्तर पर्वतका विशेष वर्णन ---------- १७०
मानुषोत्तर पर्वतको लाँघकर ऋद्धिधारी मनुष्य भी नहीं जा सकते ---------- १७०
मनुष्योंके भेद ---------- १७१
आर्य शब्दका अर्थ और आर्योंके भेद ---------- १७१
म्लेच्छोंके भेद व उनके विशेष वर्णनके प्रसंगसे अन्तर्द्वीपों का वर्णन ---------- १७१
शक, यवन आदि कर्मभूमिज म्लेच्छ हैं इस वातका निर्देश ---------- १७२
कर्मभूमि कहाँ कहाँ हैं ---------- १७२
भोगभूमियाँ कहाँ कहाँ हैं ---------- १७२
कर्म शब्दका अर्थ---------- १७२
कर्मभूमि और भोगभूमि बननेका कारण ---------- १७३
मनुष्योकी उत्कृष्ट और जघन्य स्थिति ---------- १७४
पल्यके तीन भेद और उनका प्रमाण लाने की विधि ---------- १७४
उद्धारसागरका प्रमाण ---------- १७४
द्वीप-समुद्रोंकी गणना ---------- १७४
अद्धासागरका प्रमाण ---------- १७५
अद्धासागरसे किन किनकी गिनती होती हैं इसकाविचार ---------- १७५
तिर्यञ्चोंकी उत्कृष्ट और जघन्य स्थिति ---------- १७५
तिर्यग्योनिज शब्दका अर्थ---------- १७५

चौथा अध्याय

देवोंके चार भेद---------- १७७
देव शब्दका अर्थ ---------- १७७
निकाय शब्दका अर्थ ---------- १७७
आदिके तीन निकायोंमें लेश्या विचार ---------- १७७
आदिके तीन निकायोंमें लेश्या विचार ---------- १७७
देवनिकायोंमें अन्तर्भेदोंका निर्देश ---------- १७८
कल्पोपपन्न पद देनेकी सार्थकता ---------- १७८
देवनिकायोंमें अन्तर्भेदोंका नामनिर्देश ---------- १७८
इन्द्र आदि शब्दोंका अर्थ ---------- १७९
व्यन्तर और ज्योतिषियोंमें कितने अन्तर्भेद हैं इसका विचार ---------- १७९
प्रथम दो निकायोंमें इन्द्रिोंका विचार ---------- १८०
प्रत्येक निकायके अवान्तर भेदोंके इन्द्रोंके नाम ---------- १८०
ऐशान कल्पोंमें प्रवीचारका विचार---------- १८०
शेष कल्पोंमें प्रवीचारका विचार ----------१८१
प्रवीचार पद देनेकी सार्थखता ---------- १८२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कल्पातीत देवोंमें प्रवीचार नहीं है इस बातका निर्देश ---------- १८२
भवनवासियों के दस भेद ---------- १८२
भवनवासी शब्दका अर्थ ---------- १८२
असुरकुमार आदि नामोंमें कुमार पदकी सार्थखता---------- १८२
भवनवासियोंका निवासस्थान ---------- १८२
व्यन्तरोंके आठ भेद ---------- १८३
व्यन्तर शब्दका अर्थ ---------- १८३
व्यन्तरोंका निवासस्थान ---------- १८३
ज्योतिषीयोंके पाँच भेद ---------- १८३
ज्योतिष्क पदकी सार्थकता ---------- १८३
सूर्याचन्द्रमसौ पदके पृथक् देनेका कारण ---------- १८३
ज्योतिषियोंका पूरे विवरणके साथ निवासस्थान ---------- १८३
मनुष्य लोकमें ज्योतिषियोंकी निरन्तर मेरुप्रदक्षिणा ---------- १८४
ज्योतिष्क विमानोंके गमन करनेका कारण ---------- १८४
ज्योतिष्कदेव मेरु पर्वतसे कितनी दूर रहकर प्रदक्षिणा करते रहैं ---------- १८४
गतिमान् ज्योतिष्कोंके निमित्तसे कालका विभाग होता है ---------- १८५
कालके दो भेद व व्यवहार कालका स्वरूप ---------- १८५
मनुष्य लोकके बाहर ज्योतिषस्क विमान अवस्थित हैं ---------- १८६
वैमानिकोंके वर्णनके प्रसंगके अधिकार सूत्र ---------- १८६
विमान शब्दका अर्थ व उसके भेदोंका विचार ---------- १८६
वैमानिकोंके दो भेद ---------- १८७
वैमानिक देव ऊपर ऊपर निवास करते हैं ---------- १८७
कितने कल्प विमानोंमें वे देव रहते हैं उसका विचार ---------- १८७
सौधर्म आदि शब्दके व्यवहारका कारण ---------- १८८
मेरु पर्वतकी ऊँचाई व अवगाहका परिमाण ---------- १८८
अधोलोक आदि शब्दोंकी सार्थकता---------- १८८
सौधर्म कल्पका ऋजु विमान कहाँ पर हैं इसका निर्देश ---------- १८९
नवसु पदके पृथक् देनेका कारण ---------- १८९
देवोंमें उत्तरोत्तर स्थिति प्रबावादिकृत विशेषता ---------- १८९
गति आदि शब्दों का अर्थ ---------- १९०
कहाँके देवके शरीरकी कितनी ऊँचई हैं आदि का विचार ---------- १९०
वैमानिक देवों के लेश्याका विचार ---------- १९०
कहाँके देवके शरीरकी कितनी ऊंचाई हैं आदि का विचार ---------- १९०
वैमानिक देवों में लेश्याका विचार ---------- १९०
सूत्रार्थकी आगमसे संगति बिठानेका उपक्रम ---------- १९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्रैवेयकके पूर्व तक कल्प संज्ञा ---------- १९२
लौकान्तिक देवोंका निवासस्थान---------- १९२
लौकान्तिक शब्दकी सार्थकता ---------- १८२
लौकान्तिकोंके आठ भेदोंके नाम ---------- १८२
किस दिशामें किस नामवाले लौकान्तिक रहते हैं इसका विचार ---------- १९३
च शब्दसे समुच्चित अन्य लौकान्तिकोंका निर्देश ---------- १९३
विजयादिकमें द्विचरम देव होते हैं ---------- १९३
आदि पदसे सर्वार्थसिद्धिके ग्रहण न होनेका कारण ---------- १९३
द्विचरम शब्दका अर्थ ---------- १९४
तिर्यग्योनिसे किनका ग्रहण होता है इसका विचार ---------- १९४
तिर्यञ्च सब लोकमें रहते हैं अतः उनका क्षेत्र नहीं कहा ---------- १९४
भवनयासियोंके वानत्र भेदोंकी उत्कृष्ट आयु ---------- १९५
सौधर्म और ऐशान कल्पमें उत्कृष्ट आयु ---------- १९५
अधिके यह अधिकार वचन है इस बातका निर्देश ---------- १९५
सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पमें उत्कृष्ट आयु ---------- १९६
शेष बारह कल्पोंमें उत्कृष्ट आयु ---------- १९६
तु पदकी सार्थखता ---------- १९६
कल्पातीत विमानोंमें उत्कृष्ट आयु ---------- १९६
सर्वार्थसिद्धी पदको पृथक् ग्रहण करनेका कारण ---------- १९७
सौधर्म और ऐशान कल्पमें जघन्य आयु ---------- १९७
शेष सबमें जघन्य आयुका विचार ---------- १९७
द्वितीयादि नरकोंमें जघन्य आयु ---------- १९८
प्रथम नरकोंमें जघन्य आयु ---------- १९८
भवनवासियोंमें जघन्य आयु ---------- १९९
व्यन्तरोंमें जघन्य आयु ---------- १९९
व्यन्तरोंमें उत्कृष्ट आयु ---------- १९९
ज्योतिषियोमें उत्कृष्ट आयु ---------- १९९
ज्योतिषियोंमें जघन्य आयु---------- २००
लौकान्तिक देवोंमें आयुका विचार ---------- २००

पाँचवाँ अध्याय

अजीवकाय द्रव्योंका निर्देश ---------- २०१
काय शब्द देनेकी सार्थखता ---------- २०१
अजीव यह धर्मादिक द्रव्योंकी सामान्य संज्ञा है ---------- २०१
ये धर्मादिक द्व्य हैं इस बातका निर्देश ---------- २०२
द्रव्य पदकी व्युत्पत्ति ---------- २०२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ये धर्मादिक द्रव्यत्व नामक सामान्यके योगसे द्रव्य नहीं है.... ---------- २०२
गुणसमुदायो द्रव्यम् ऐसा माननेमें भी आपत्ति ---------- २०२
द्रव्य पदकी व्युत्पपत्ति और उसकी सिद्धइ---------- २०२
द्रव्याणि बहुवचन देनेका कारण व अन्य विसेषताओंका निर्देश ---------- २०३
जीव भी द्रव्य हैं इस बातका निर्देश ---------- २०३
नैयायिकोंके द्वारा माने गये द्रव्योंके अन्तर्भाव की सिद्धि ---------- २०३
द्व्योंकी विशेषता ---------- २०५
नित्य आदि प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २०५
पुद्लग द्रव्य रूपी है इसका विचार ---------- २०५
रूप पदका अर्थ---------- २०६
आकाश पर्यन्त एक एक द्रव्य हैं इसका विचार ---------- २०६
सूत्रमें द्रव्य पदके ग्रहण करनेकी सार्थखता ---------- २०६
धर्मादिक द्रव्य निष्क्रिय हैं ---------- २०७
निष्क्रिय शब्दका अर्थ ---------- २०७
धरह्मादिक द्रव्य निष्क्रिय होने पर भी उनमें उत्पादादिकी सिद्धि ---------- २०८
उत्पादके दो भेद ---------- २०८
निष्क्रिय धर्मादिक द्रव्य गति आदिके हेतु कैसे है इसका विचार ---------- २०८
धर्म, अधर्म और एक जीवके प्रदेश ---------- २०८
असंख्येयके तीन भेद ---------- २०८
प्रदेश शब्दका अर्थ ---------- २०८
धर्म और अधर्म द्रव्य लोकाकाशव्यापी हैं ---------- २०८
जीव शरीरपरिमाण होकर भी लोकपूरण समुद्धात के समयलोकाकाशव्यापी होता है ---------- ०२८
आकाशके प्रदेशोंका विचार ---------- २०९
आकाशके प्रदेशोंका विचार ---------- २०९
च पदकी सार्थखता ---------- २०९
अनन्तके तीन भेद ---------- २०९
असंख्यातप्रदेशी लोकमें अनन्तानन्त पेरदेशी स्कन्ध कैसे समाता है िसका विचार ---------- २०९
अणुके दो आदि प्रदेश नहीं होते ---------- २१०
सब द्रव्योंका लोकाकाशमें अवगाह है ---------- २१०
आधाराधेयविचार ---------- २१०
लोक शब्दका अर्थ ----------२११
आकाशके दो भेद और उनका अर्थ ----------२११
लोकालोक विभागका कारण ----------२११
धर्म और अधर्म द्रव्य लोकव्यापी हैं ----------२११
पुद्गल द्रव्य लोकके एक प्रदेश आदिमें रहते हैं ---------- २१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मूर्त पुद्गल एकत्र कैसे रहते हैं इनका विचार ---------- २१२
जीव लोकके असंख्येयभाग आदिमें रहते हैं ---------- २१२
सशरीरी अनन्तानन्त जीव असंख्येयभाग आदिमें कैसे रहते हैं इसका विचार ---------- २१३
जीवके असंख्येयभाग आदिमें रहनेका कारण ---------- २१३
धर्म और अधरम द्रव्यका उपकार ---------- २१४
गति, स्थिति और उपग्रह पदका अर्थ---------- २१४
उपग्रह पदकी सार्थकता ---------- २१४
गति और स्थितिको धर्म और अधर्म द्रव्यका उपकार माननेका कारण ---------- २१५
गति और स्थितिके प्रतिबन्ध न होनेका कारण ---------- १५
धर्म और अधर्म द्रव्यकी सिद्धि ---------- २१५
अवकाशका उपकार ---------- २१६
निष्क्रिय धर्मादि द्रव्योंको आकाश कैसे अवगाह देता है इसका विचार ---------- २१६
दो स्कन्धों के परस्पर टकरानेसे आकाशके अवकाश दानकी हानि नहीं होती---------- २१६
सूक्ष्म पुद्गल परस्पर अवकाश देते हैं तो भी आकाशके अवकाशदानकी हानि नहीं होती.... ----- २१६
पुद्गलोंका उपकार ---------- २१७
कार्मण शरीरके पुद्गलपनेकी सिद्धि ---------- २१७
वचनके दो भेद औऱ उनका स्वरूप व पुद्गलपनेकी सिद्धि ---------- २१८
मनके दो भेद औऱ उनका स्वरूप व पुद्गलपनेकी सिद्धि ---------- २१८
मन द्रव्यान्तर नहीं है इसकी वसयुक्तिक सिद्धइ ---------- २१८
प्राण और अपान शब्दका अर्थ ---------- २१९
मन, प्राण और अपानके पुद्गलपनेकी सिद्धइ ---------- २१९
आत्माके अस्तित्वकी सिद्धि ---------- २१९
पुद्गलोंके अन्य उपकार ---------- २१९
सुख, दुःख आदि शब्दोंका अर्थ ---------- २१९
उपग्रह पदकी सार्थखता ---------- २२०
जीवोंका उपकार ---------- २२०
कालका उपकार ---------- २२२
वर्तना शब्द का अर्थ ---------- २२२
काल द्रव्य क्रियावान् नहीं है इसका समर्थन ---------- २२२
कालके अस्तित्वकी सिद्धि ---------- २२२
परिणाम पदका अर्थ ---------- २२२
क्रिया पद का अर्थ ---------- २२३
परत्व और अपरत्वका विचार ---------- २२३
वर्तनासे पृथक् परिणामादिके ग्रहण करनेका प्रयोजन ---------- २२३
पुद्गलका लक्षण ---------- २२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्पर्श आदि पदोंका अर्थ व उनके भेद ---------- २२३
रूपिणः पुद्गला सूत्रके रहते हुए भी इस सूत्रके कहने कारण ---------- २२४
पुद्गलकी व्यञ्जन पर्यायोंका निर्देश ---------- २२४
शब्दके दो भेद व उनका विशेष विचार ---------- २२४
बन्धके दो भेद व उनका विसेष विचार ---------- २२५
सौक्ष्म्यके दो भेद व उनका विचार ---------- २२५
स्थौल्य के दो भेद व उनका विचार ---------- २२५
संस्थापनका अपने भेदोंके साथ विचार ---------- २२५
भेदके छह भेद व उनका विचार ---------- २२५
तम आदि सेषका स्वरूप निर्देश ---------- २२६
पुदग्लके भेद ---------- २२६
अणु शब्दका अर्थ ---------- २२६
स्कन्ध शब्दका अर्थ ---------- २२६
स्कन्धोंकी उत्पत्तिका हेतु ---------- २२७
भेद औऱ संघात पद का अर्थ ---------- २२७
बहुवचन निर्देशकी सार्थखता ---------- २२७
अणुकी उत्पत्तिका हेतु ---------- २२८
भेदसंघातेभ्यः इस सूत्रमें भेद पदके ग्रहण करनेका प्रयोजन ---------- २२८
अचाक्षुष चाक्षुष कैसे होता है इसका विचार ---------- २२८
द्रव्यका लक्षण ---------- २२९
सत्की व्याख्या ---------- २२९
उत्पाद आदि पदोंका स्थ ---------- २२९
युक्त पद किस अर्थ में ग्रहण किया है इसका विचार ---------- २२९
नित्य पदकी व्याख्या ---------- २३०
मुख्यता और गौणतासे अनेकान्तकी सिद्धि ---------- २३१
पुद्गलों के बन्धका कारण ---------- २३२
जघन्य गुणवालोंका बन्ध नहीं होता ---------- २३३
गुणसाम्यमें सदृशों का बन्ध नहीं होता ---------- २३३
गुणवैषम्यमें सदृशोंका भी बन्ध होता है यह बतलानेके लिए सूत्रमें सदृश पदका ग्रहण
किया ---------- २३४
दो अधिक गुणवालोंका बन्ध होता है ---------- २३४
बन्धके प्रकारोंका विशेष विवेचन ---------- २३४
बन्ध होने प अधिक गुणवाले पारिणामिक होते हैं---------- २३५
द्रव्य का लक्षण ---------- २३७
एक द्रव्यके दूसरे द्रव्यसे भिन्न होनेके कारणकी सयुक्तिक सिद्धइ ---------- २३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काल भी द्रव्य है ---------- २३८
कालमें द्रव्यपने कीसिद्धि ---------- २३९
कालद्रव्यको अलग कहनेका कारण ---------- २३९
विशेषार्थ द्वारा कालका विचार ---------- २४०
कालकी पर्याय अनन्त समय रूप हैं इसकी सिद्धि ---------- २४१
गुण का लक्षण ---------- २४२
गुणका लक्षण पर्यायों में न जाय इसकी व्यवस्था ---------- २४२
परिणामका स्वरूप ---------- २४३
परिणामके दो भेद और उनकी सिद्धि ---------- २४३
छठा अध्याय
योगका स्वरूप ---------- २४४
कर्म शब्दका अर्थ---------- २४४
योगके भेद ---------- २४४
काय, वचन और मनोयोगका स्वरूप ---------- २४४
आस्रवका स्वरूप ---------- २४५
पुण्यास्रव और पापास्रव ---------- २४५
ये कायादि तीनों योग शुभ और अशुभ इन दो भागों में विभक्त हैं ---------- २४५
शुभयोगका स्वरूप ---------- २४५
अशुभ योगका स्वरूप ---------- २४५
पुण्य और पाप पदकी व्याख्या ---------- २४५
साम्परायिक और ईर्यापथ, आस्रव कितने होते हैं ---------- २४६
आस्रवके स्वामीके दो भेद ---------- २४६
कषाय शब्दका अर्थ ---------- २४६
संपराय शब्द का अर्थ ---------- २४६
ईर्या शब्दका अर्थ ---------- २४६
साम्परयाकि आस्रवके भेद ---------- २४६
पचीस क्रियाओंका विशेष विवेचन ---------- २४७
किन कारणोंमसे आस्रवमें विशेषता होती है इसका निर्देश ---------- २४८
तीव्र, मन् आदि पदोंकी व्याख्या ---------- २४८
अधिकरणके दो भेद ---------- २४९
जीवाजीवाः ऐसा बहुवचन रखने काराण ---------- २४९
जीवाधिकरणके भेद ---------- २४९
सरम्ब आदगि प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २४९
जीवाधिकरणके १०८ भेदोंका नामोल्लेख ---------- २५०
च पदकी सार्थखता ---------- २५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अजीवाधिकरणके भेद ---------- २५०
निसर्ग आदि पदों का अर्थ ---------- २५१
पर पदकी सार्थकता ---------- २५१
निर्वर्तना ादिके उत्तर भेदोंकी व्याख्या ---------- २५१
ज्ञानावरण और दर्शनावरणके आस्रव ---------- २५१
प्रदोष आदि प्रत्येक पदका अर्थ ---------- २५१
आसादन और उपघात में अन्तर ---------- २५२
तत् पदसे ज्ञान और दर्शनका ग्रहण कैसे होता है इसका विचार ---------- २५२
प्रदोषादि ज्ञानावरण और दर्शनावरण दोनोंके आस्रवके हेतु कैसे है इसका विचार ---------- २५२
आसातावेदनीयके आस्रव ---------- २५३
दुःख आदि प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २५३
शोकादिक दुःखके प्रकार होकर भी उनके अलग से ग्रहण करनेका कारण ---------- २५३
यदि दुःखादिकअसाता वेदनीयके आस्रव हैं तो केशोत्पाटन आदि क्यों करते हैं इसका
संयुक्तिक विचार ---------- २५३
सातावेदनीयके आस्रव ---------- २५४
सूत्रगत प्रत्येक पदकी व्ायख्या ---------- २५४
इति पदकी सार्थखता ---------- २५४
दर्शनमोहके आस्रव ---------- २५५
केवलीआदि पदोंकी व्याख्या ---------- २५५
दाहरण अवर्णवादका निरूपण---------- २५५
चारित्रमोहके आस्रव ---------- २५५
कषाय आदि पदोंकी व्याख्या ---------- २५५
चारित्रमोहके आस्रवोंका विस्तार से निरूपण ---------- २५६
नरकायुके आस्रव ---------- २५६
नरकायुके आस्रवोंका विस्तारसे निरूपण---------- २५६
तिर्यचायुके आस्रव ---------- २५७
तिर्यांचायुके आस्रवोकंा विस्तारसे निरूपण ---------- २५७
मनुष्यायुके आस्रव ---------- २५७
मनुष्यायुके आस्रवोंका विस्तारसे निरूपण ---------- २५७
मनुष्यायुके अन्य आस्रव ---------- २५७
चारों आयुओंके आस्रव ---------- २५८
च पद की सार्थकता ---------- २५८
देवायुके आस्रव ---------- २५८
सूत्रगत प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २५८
देवायुका अन्य आस्रव ---------- २५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्व च पृथक् सूत्र बनानेका प्रयोजन ---------- २५९
अंशुम नामकर्मके आस्रव ---------- २५९
सूत्रगत प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २५९
अशुभनामकर्मके आस्रवोंका विस्तारसे कथन ---------- २५९
शुभनामकर्मके आस्रवोंका विस्तारसे कथन ---------- २५९
शुभनामकर्मके आस्रव ---------- २६०
च पदकी सार्थखता ---------- २६०
शुभनामकर्मके आस्रवोंका विस्तारसे कथन ---------- २६०
तीर्थंकर प्रकतिके आस्रव ---------- २६०
सूत्रगत प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २६१
नीचगोत्रके आस्रव ---------- २६१
सूत्रगत प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २६२
उच्चगोत्र के आस्रव ---------- २६२
सूत्रगत प्रत्येक पद की व्याख्या ---------- २६२
अन्तराय कर्मके आस्रव ---------- २६२
तत्प्रदोष आदि प्रतिनियत कर्मोंके आस्रवोंका..... ---------- २६३

सातवाँ अध्याय

व्रतकी व्याख्या ---------- २६४
हिंसादि परिणामविशेष अध्रुव हैं उनसे दूर होना कैसे सम्भव हैं... ---------- २६४
हिंसा आदि पदोंका क्रमसे रखने का प्रयोजन ---------- २६५
रात्रिभोजन विरमण व्रत अलगसे नहीं कहने का कारण ---------- २६५
व्रतके दो भेद ---------- २६५
प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २६५
व्रतकी स्थिरताके लिए पांच-पाँच भावनोंका अधिकारसूत्र ---------- २६
अहिंसा व्रतकी पाँच भावनाएँ ---------- २६६
सत्यव्रतकी पाँच भावनाएँ ---------- २६६
अनुवीचीभाषण पदका अर्थ ---------- २६६
अचौर्यव्रतकी पाँच भावनाएँ ---------- २६६
प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २६७
ब्रह्मचर्य व्रतकी पाँच भावनाएँ ---------- २६७
परिग्रहत्याग व्रतकी पाँच भावनाएँ ---------- २६७
हिंसादिकमें अपाय और अवद्यदर्शनका उपदेश ---------- २६८
हिंसादिक कैसे अपाय और अवद्य है इसका विस्तारसे विवेचन ---------- २६८
हिंसादिक दुःख ही हैं इस भावनाका उपदेश ---------- २६८
हिंसादिक कैसे अपाय और अवद्य है इसका विस्तारसे विवेचन ---------- २६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिंसादिक दुःख ही है इस भावनाका उपदेश ---------- २६८
हिंसादिक दुःख कैसे है इसका विस्तारसे विवेचन ---------- २६९
लोककल्याणकारी मैत्री आदि चार भावनाएँ ---------- २६९
मैत्री आदि पदकी व्याख्या ---------- २७०
संवेग और वैराग्यके लिए जगत् और कायके स्वभावका चिन्तन ---------- २७०
लोकका आकार ---------- २७०
जगत् और कायके स्वभावका किस प्रकार विचार करे ---------- २७०
हिंसाकी व्याख्या ---------- २७१
प्रमत्तयोगापदकी सार्थखता ---------- २७१
प्राणोंका वियोग न होने पर हिंसा होती है इस बातका उल्लेख ---------- २७१
अनृतकी व्याख्या ---------- २७२
असत् और अनृत पदकी व्याख्या ---------- २७२
हिंसाकर वचन ही अनृत है इस बातका खुलासा ---------- २७२
स्तेयकी व्याख्या ---------- २७२
आदान पदका अर्थ ---------- २७२
कर्म और नोकर्मका ग्रहण स्तेय क्यों नहीं है इसका विचार ---------- २७३
भिक्षुके भ्रमण करते समय रथ्याद्वार में प्रवेश करनेसे चोरी क्यों नहीं होती इसका विचार ---- २७३
अब्रह्मकी व्याख्या ---------- २७३
मिथुन पदका अर्थ ---------- २७३
सब कर्म मैथुन क्यों नहीं है इसका खुलासा ---------- २७३
ब्रह्म पदकी व्याख्या ---------- २७४
मूर्च्छा पदका अर्थ ---------- २७४
मूर्च्छा पदसे वातादि प्रकोपजन्य मूर्च्छाका ग्रहण क्यों नहीं किया इस बातका खुलासा ------- २७४
मूर्च्छाको परिग्रह मानने पर बाह्य पदार्थ परिग्रह कैसे हैं इस बातका विचार ---------- २७४
व्रतीका स्वरूप ---------- २७५
शल्य पदकी व्याख्या व उसके भेद ---------- २७५
शल्य के तीनों भेदों की व्याख्या ---------- २७५
निःशल्यको व्रती कहने का प्रयोजन ---------- २७५
व्रतीके दो भेद ---------- २७६
अगार पदका अर्थ ---------- २७६
मुनिके शून्य अगार आदिमें रहने पर अगारीपन प्राप्त होता है.... ---------- २७६
अगारीके पूरे व्रत नहीं होने से वह व्रती कैसे है इस बातका विचार ---------- २७५
अगारीकी व्याख्या ---------- २७७
अगारीके व्रतोंको अणु कहने का प्रयोजन ---------- २७७
अगारी किस प्रकारकी हिंसाका त्यागी होता है ---------- २७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिंसा आदि पाँचों अणुव्रतोंकी व्याख्या ---------- २७७
अगारी अन्य किन गुणोंसे सम्पन्न होता है इसका विचार ---------- २७८
दिग्विरतिव्रतकी व्याख्या ---------- २७८
देशाविरति व्रतकी व्याख्या ---------- २७८
अनर्थदण्डका अर्थ ---------- २७८
अनर्थदण्डके पाँच भेद और उनकी व्याख्या ---------- २७८
सामायिक की व्याख्या ---------- २७९
प्रोषध व उपवास शब्दका अर्थ ---------- २७९
प्रोषधोपवासकी व्याख्या ---------- २७९
उपभोगपरिभोगकी व्याख्या ---------- २८०
मधु आदिके सप्रयोजनत्यागका उपदेश... ---------- २८०
सप्रयोजन त्यागका उपदेश ---------- २८०
यान वाहन आदिके परिमाण कनरेका उपदेश ---------- २८०
अतिथि पदकी व्याख्या ---------- २८०
अतिथिसंविभागके चार भेद ---------- २८०
गृहस्थका सल्लेखना धर्म ---------- २८०
मरण पदकी व्याख्या ---------- २८०
सल्लेखना पदका अर्थ ---------- २८०
सूत्रमें जोषिता पद रखनेका कारण---------- २८१
सल्लेखना आत्मवध नहीं है इस बात का समर्थन ---------- २८१
सम्यगदृष्टिके पाँच अतिचार ---------- २८२
प्रशंसा और संस्तवमें अन्तर ---------- २८२
सम्यग्दर्शनके आठ अंगे होने पर पाँच अतिचार.... ---------- २८२
व्रतों और शीलों में पांच-पाँच अतिचारोंको चलानेवाला अधिकार सूत्र ---------- २८२
अहिंसाणुव्रत के पाँच अतिचार ---------- २८३
बन्ध आदि प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २८३
सत्याणुव्रतके पांच अतिचार ---------- २८३
मिथ्योपदेश आदि प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २८३
अचौर्याणुव्रतके पांच अतिचार ---------- २८४
स्तेनप्रयोग आदि प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २८४
स्वदारसन्तोष व्रतके पांच अतिचार ---------- २८५
परविवाहकरण आदि प्रत्येक पदकी व्याख्या---------- २८५
परिग्रहपरिमाण व्रतके पाँच अतिचार ---------- २८५
दिग्विरमणव्रतके पाँच अतिचार ---------- २८६
ऊर्ध्वव्यतिक्रम आदि प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देशविरमणव्रतके पांच अतिार ---------- २८६
आनयन ादि प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २८६
अनर्थदण्डविरतिव्रत के पाँच अतीचार ---------- २८६
कन्दर्प आदि प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २८६
सामायिकके पांच अतीचार ---------- २८७
योगदुष्प्रणिधान आदि प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २८७
प्रोषधोपवासके पाँच अतिचार ---------- २८७
अप्रत्यवेक्षित आदि प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २८७
भोगोपभोगपरिसंख्यानव्रतके पांच अतिचार ---------- २८८
सचित्त आदि प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २८८
अतिथिसंविभाग शीलके पांच अतिचार ---------- २८८
अचित्तनिक्षेप आदि प्रत्येक पदकी व्याख्या ---------- २८८
सल्लेखनाके पांच अतिचार ---------- २८८
जीविताशंसा आदि प्रत्येक पदकी व्याख्या---------- २८८
दान पदकी व्याख्या ---------- २८९
अनुग्रह पदका अर्थ ---------- २८९
स्वोपकार क्या है और परोपकार क्या है इसका खुलासा ---------- २८९
स्व शब्दका अर्थ ---------- २८९
दानमें विशेषता लानेके कारण ---------- २८९
विधिविशेष शब्दका अर्थ ---------- २८९
विधिविशेष आदिका खुलासा ---------- २८९

आठवाँ अध्याय

बन्धके हेतु ---------- २९१
प्रमाद पदकी व्याख्या ---------- २९१
मिथ्यादर्शनके दो भेद और उनकी व्याख्या---------- २९१
परोपदेशनिमित्त मिथ्यादर्शनके चार या पांच भेद व उनका खुलासा ---------- २९१
क्रियावादी आदिके अवानत्र भेद ---------- २९२
अविरतिके १२ भेद ---------- २९२
कषायके २५ भेद ---------- २९२
मनोयोग ादिके अवान्तर भेद ---------- २९२
प्रमादके अनेक भेद ---------- २९२
किस गुणस्थानमें कितने बन्धके हेतु हैं इसका विचार ---------- २९२
बन्धकी व्याख्या---------- २९३
सकषायत्वात् पद देनेका प्रयोजन ---------- २९३
जीव पद देनेका प्रयोजन ---------- २९३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्मणो योग्यान् इस प्रकार निर्देश करनेका प्रयोजन ---------- २९३
दृष्टान्तपूर्वक कर्मरूप परिणमन का समर्थन ---------- २९३
स पदकी सार्थकता ---------- २९४
बन्धके चार भेद ---------- २९४
प्रकृति आदि प्रत्येक पदकी दृष्टांतपूर्वक व्याख्या ---------- २९४
प्रकृति और प्रदेशबन्धका कारण योग है तथा.... ---------- २९५
प्रकृतिबन्धके आठ भेद ---------- २९६
आवरण पदकी व्याख्या ---------- २९६
वेदनीय आदि प्रत्येक पदकी व्युत्पत्ति ---------- २९६
प्रकृतिबन्धके आठ भेदोंके अवान्तर भेद ---------- २९७
ज्ञानावरणके पांच भेद ---------- २९७
अभव्यके मनःपर्यय और केवलज्ञान शक्ति किस अपेक्षासे है ---------- २९७
भव्य और अभव्य विकल्पका कारण ---------- २९८
दर्शनावरणके नौ भेद ---------- २९८
निद्रा आदि पाँचोंकी व्याख्या ---------- २९९
वेदनीय के दो भेद---------- २९९
सद्वेद्य और असद्वेद्यकी व्याख्या---------- २९९
मोहनीयके २८ भेद ---------- ३००
दर्शनमोहनीय के तीन भेदोंका कारण व उनकी व्याख्या ---------- ३००
चारित्रमोहनीय के सब भेदोंकी व्याख्या ---------- ३०१
आयुकर्मके चार भेद ---------- ३०३
आयुव्यपदेशका कारण व चारों आयुओंकी व्याख्या ---------- ३०३
नामकर्मके अवान्तर भेद ---------- ३०३
गति व उसके भेदोंकी व्याख्या ---------- ३०३
जाति व उसके भेदोंकी व्याख्या ---------- ३०४
शरीर नामकर्म व उसके भेदोंकी व्याख्या---------- ३०४
अंगोपांग व उसके भेदोंकी व्याख्या ---------- ३०४
निर्माण व उसके भेदों की व्याख्या ---------- ३०४
बन्धन की व्याख्या ---------- ३०४
संघातकी व्याख्या ---------- ३०४
संस्थान व उसके छह भेदों की व्याख्या ---------- ३०४
संहनन व उसके छह भेदोंकी व्याख्या ---------- ३०४
स्पर्शादिक बीस की व्याख्या ---------- ३०५
आनुपूर्व्य व उसके चार भेदोंकी व्याख्या ---------- ३०५
पूर्वोक्त भेदोंके सिवा अन्य भेदोंकी व्याख्या ---------- ३०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोत्र कर्मके दो भेद ---------- ३०७
उच्च व नीच गोत्रकी व्याख्या ---------- ३०७
अन्तराय कर्मके पांच भेद ---------- ३०८
दानान्तराय आदिके कार्य ---------- ३०८
आदि के तीन कर्म व अन्तराय कर्मका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध ---------- ३०९
इन कर्मों के उत्कृष्ट स्थितिबन्ध का स्वामी ---------- ३०९
मोहनीय कर्मका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध ---------- ३०९
मोहनीयके उत्कृष्ट स्थितिबन्धका स्वामी ---------- ३०९
नाम और गोत्रकर्मका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध ---------- ३०९
इन कर्मोंके उत्कृष्ट स्थितिबन्ध का स्वामी ---------- ३०९
आयुकर्मका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध ---------- ३१०
आयुकर्मके उत्कृष्ट स्थितिबन्धका स्वामी ---------- ३१०
वेदनीय कर्म का जघन्य स्थितिबन्ध ---------- ३१०
नाम और गोत्रकर्मका जघन्य स्थितिबन्ध---------- ३१०
शेष कर्मों का जघन्य स्थितिबन्ध ----------३११
अनुभागबन्धकी व्याख्या ----------३११
विपाकपदकी व्याख्या ----------३११
अनुभवके दो भेद ----------३११
अनुभवकी दो प्रकार से प्रवृत्ति ----------३११
मूल प्रकृतियों का स्वमुख से अनुभव ----------३११
कुछ कर्मोंको छोड़कर उत्तर प्रकृतियोंका परमुख से भी अनुभव होता है ---------- ३१२
अपने कर्म के नामानुसार अनुभव होता है ---------- ३१२
कर्मफल के बाद निर्जरा होती है ---------- ३१२
निर्जरा व उसके भेदों की व्याख्या ---------- ३१२
च पद की सार्थकता ---------- ३१२
विशेषार्थ द्वारा अनुभागबन्धका विसेष विवरण ---------- ३१३
प्रदेशबन्ध की व्याख्या ---------- ३१५
पुण्य प्रकृतियाँ ---------- ३१६
पुण्य प्रकृतियों के नाम ---------- ३१६
पाप प्रकृतियाँ ---------- ३१७
पाप प्रकृतियों के नाम ---------- ३१७

नौवाँ अध्याय

संवर का स्वरूप ---------- ३१८
संवर के दो भेद व उनके लक्षण ---------- ३१८
किस गुणस्थान में किस निमित्त से कितनी प्रकृतियों का संवर होता है ---------- ३१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संवर के हेतु ---------- ३२०
गुप्ति, समिति, धर्म, अनुप्रेक्षा और परीषह जयका स्वरूप ---------- ३२१
सूत्रमें आए हुए सः पदकी सार्थखता ---------- ३२१
संवर और निर्जराके हेतुभूत तपका निर्देश ---------- ३२१
तपका धर्ममें अन्तर्भाव होता है फिर भी उसके अलग से कहने का कारण ---------- ३२१
तप अभ्युदय स्वर्गादिका कारण होकर भी.... ---------- ३२१
गुप्तिका स्वरूप ---------- ३२२
निग्रह पद की व्याख्या ---------- ३२२
निग्रह पद की व्याख्या ---------- ३२२
सम्यक् पदकी सार्थकता ---------- ३२२
गुप्ति संवरका कारण कैसे है इस बातका निर्देश ---------- ३२२
समिति के पाँच भेद ---------- ३२२
समतिि संकर का हेतु कैसे है इस बातका निर्देश ---------- ३२३
धर्म के दस भेद ---------- ३२३
गुप्ति, समिति और धर्मको संवरका हेतु कहने का प्रयोजन ---------- ३२३
क्षमादि दस धर्मोंका स्वरूप ---------- ३२३
सत्य और भाषा समितिमें अन्तर का कथन ---------- ३२३
ये दस धर्म संवरके कारण कैसे है इसका विचार ---------- ३२४
अनुप्रेक्षाके बारह भेद ---------- ३२४
अनित्यादि बारह अनुप्रेक्षाओंके चिन्तन करने की प्रक्रिया ---------- ३२४
निर्जरा के दो भेद व उनकी व्याख्या ---------- ३२७
ये अनुप्रेक्षाएँ संवर का कारण कैसे हैं इसका विचार ---------- ३२८
अनुप्रेक्षा को संवरके हेतुओंके मध्यमें रखनेका प्रयोजन ---------- ३२९
परीषह की निरुक्ति व प्रयोजन ---------- ३२९
परीषहजय संवर और निर्जराका कारण कैसे है इसका विचार ---------- ३२९
परीषहोंके नाम ---------- ३३०
क्षुधादि बाईस परीषहों को किस प्रकार जीतना चाहिए इसका पृथक्-पृथख् विचार ---------- ३३०
पूर्वोक्त विधि से परीषहों को सहन करने से संवर होता है इसका निर्देश ---------- ३३६
सूक्ष्मासाम्पराय और छद्मस्थ वीतराग के चौदह परीषह होते हैं.... ---------- ३३७
सूक्ष्मसाम्पराय जीवके मोहोदयनिमित्तक परीषह क्यों नहीं होते.... ---------- ३३७
पूर्वोक्त जीवोंके ये चौदह परीषह किस अपेक्षासे होते हैं... ---------- ३३७
जिनके ग्यारह परीषह होते हैं.... ---------- ३३७
जिनके ग्यारह परीषह किंनिमित्तक होते हैं... ---------- ३३७
जिनके मोहनीय उदय न होने पर भी.... ---------- ३३८
न सन्ति पदके अध्याहारकी सूचना---------- ३३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बादरसम्पराय के सब परीषह होते हैं इस बात का निर्देश ---------- ३३९
किन चारित्रों में सब परीषह सम्भव हैं इस बातका निर्देश ---------- ३३९
ज्ञानावरणके उदय में जो दो परीषह होते हैं उनका निर्देश ---------- ३४०
ज्ञानावरण के उदयमें प्रज्ञा परीषह कैसे होता है... ---------- ३४०
दर्शनमोह और अन्तरायके उदय में जो परिषह होते हैं उनका निर्देश ---------- ३४०
चारित्रमोह के उदय में जो परीषह होते हैं उनका निर्देश ---------- ३४१
निषद्यापरीषह चरित्रमोहके उदय में कैसे होता है इसका विचार ---------- ३४१
वेदनीयके उदयमें जो परीषह होते हैं इसका विचार ---------- ३४२
एक जीवके एक साथ कितने परीषह होते हैं.... ---------- ३४२
एक जीव के एक साथ उन्नीस परीषह क्यों होते हैं.... ---------- ३४२
प्रज्ञा और अज्ञान परीषह एक साथ कैसे..... ---------- ३४२
चारित्रके पांच भेद ---------- ३४३
चारित्रको अलगसे ग्रहण करने का प्रयोजन ---------- ३४३
सामायिकचारित्रके दो भेद और उनकी व्याख्या ---------- ३४३
छेदोपस्थापनाचारित्रका स्वरूप ---------- ३४३
परिहारविशुद्धिचारित्र का स्वरूप ---------- ३४३
सूक्ष्मसाम्पराय चारित्र का स्वरूप ---------- ३४३
अताख्यातचारित्रका स्वरूप व अथ शब्दकी सार्थखता ---------- ३४३
अथाख्यातका दूसरा नाम यथाख्यात है इस बातका सयुक्तिक निर्देश ---------- ३४४
इति शब्द की सार्थखता---------- ३४४
सामायिक आदिके आनुपूर्वी कथनकी सार्थकता ---------- ३४४
बाह्य तपके छह बेद ---------- ३४५
अनशन आदि की व्याख्या व उसके कथन का प्रयोजन ---------- ३४५
परीषह और कायक्लेश में क्या अन्तर है.... ---------- ३४५
बाह्य तप कहनेका प्रयोजन ---------- ३४५
अन्तरंग तपके छह भेद ---------- ३४६
प्रायश्चित्त आदि की व्याख्या ---------- ३४६
ध्यान छोड़कर सेष पाँच अन्तरंग तपोंके अवान्तर भेद ---------- ३४६
प्रायश्चित्तके नौ भेद ---------- ३४६
आलोचना आदि नौ भेदों की व्याख्या---------- ३४६
विनय तपके चार बेद ---------- ३४८
ज्ञानविनय आदि चार भेदों की व्याख्या---------- ३४८
वैयावृत्य तपके दस भेद ---------- ३४८
वैयावृत्य त के दस भेदों का कारण ---------- ३४८
आचार्य आदि पदोंकी व्याख्या ---------- ३४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वाध्याय तप के पाँच भेद---------- ३४९
वाचना आदि पदों की व्याख्या व प्रयोजन ---------- ३४९
व्युत्सर्ग तपके दो भेद ---------- ३४९
व्युत्सर्ग पद की निरुक्ति व भेदनिर्देश---------- ३४९
बाह्य उपधिके प्रकार ---------- ३४९
अन्तरंग उपधि के प्रकार ---------- ३४९
व्युत्सर्ग तपका प्रयोजन ---------- ३४९
ध्यान का प्रयोक्ता, स्वरूप व काल परिमाण ---------- ३५०
आदिके तीन संहनन उत्तम है इस बातका निर्देश ---------- ३५०
ध्यानके साधन ये तीनों हैं पर मोक्षका साधन प्रथम संहनन ही है.... ---------- ३५०
एकाग्रचिन्तानिरोध पदकी व्याख्या ---------- ३५०
चिन्तानिरोधको ध्यान कहनेसे आने वाले दोषका परिहार ---------- ३५०
ध्यान के चार भेद ---------- ३५१
आर्त ादि पदोंकी व्याख्या ---------- ३५१
चारों प्रकार के ध्यानों में से प्रत्येकके दो दो भेद क्यों हैं..... ---------- ३५१
अन्तके दो ध्यान मोक्षके हेतु हैं....---------- ३५१
पर शब्दसे अन्तके दो ध्यानोंका ग्रहण कैसे... ---------- ३५१
आर्तध्यान के प्रथम भेदका लक्षण ---------- ३५२
अमनोज्ञ पदकी व्याख्या ---------- ३५२
आर्तध्यान द्वितीय भेदका लक्षण ---------- ३५२
वेदना नाम आर्तध्यानका लक्षण ---------- ३५२
वेदना पद की व्याख्या ---------- ३५२
निवान नामक आर्तध्यान का लक्षण ---------- ३५२
चारों प्रकारेके आर्तध्यानके स्वामी ---------- ३५३
अविरत आदि पदों की व्याख्या ---------- ३५३
अविरत आदि तीनोंके आदिके तीन ध्यान होते हैं किन्तु निदान... ---------- ३५३
रौद्रध्यानके चार भेद व स्वामी ---------- ३५३
देशसंयतके रौद्रध्यान कैसे होता है इस बात का विचार ---------- ३५३
संयतके रौद्रध्यान न होने का कारण ---------- ३५३
धर्मध्यानके चार भेद ---------- ३५३
विचय पदकी निरुक्ति ---------- ३५३
आज्ञाविचय आदि चारोंकी व्याख्या ---------- ३५३
धर्मध्यानके चार भेद ---------- ३५३
विचय पदकी निरुक्ति ---------- ३५३
आज्ञाविचय आदि चारोंकी व्याख्या ---------- ३५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्म्यध्यानके चारों भेदोंके स्वामी ---------- ३५४
विशेषार्थ द्वारा कर्मोंके उदय व उदीरणाका विसेष विवेचन ---------- ३५५
आदिके दो शुक्लध्यान पूर्वविद्के होते हैं.... ---------- ३५७
पूर्वविद् पदका अर्थ ---------- ३५७
श्रेणी आरोहणके पूर्व धर्म्यध्यान होता है..... ---------- ३५७
अन्तके दो शुक्लध्यान केवलीके होते हैं.... ---------- ३५७
शुक्लध्यानके चारों भेदोंके स्वामी---------- ३५८
आदिके दो शुक्लध्यानोंमें विशेषताका कथन.... ---------- ३५८
एकाश्रय पदका तात्पर्य ---------- ३५८
दूसरा शुक्लध्यान अतिचार है इस बातका निर्देश ---------- ३५९
वितर्क शब्दका अर्थ ---------- ३५९
वीचार पदकी व्याख्या ---------- ३५९
अर्थ, व्यंजन, योग और संक्रान्ति पदकी व्याख्या ---------- ३५९
अर्थसंक्रान्तिका उदाहरण ---------- ३५९
व्यंजनसंक्रान्तिका प्रकार ---------- ३५९
योगसंक्रान्तिका प्रकार ---------- ३५९
मुनि पृथक्त्ववितर्क वीचारका ध्यान किस लिए.... ---------- ३६०
मुनि एकत्ववितर्कका ध्यान किस लिए और कब करता है.... ---------- ३६०
मुनि सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति ध्ायान किस लिए .... ---------- ३६०
मुनि व्युच्छिन्नक्रियानिवर्ति ध्यान किस लिए.... ---------- ३६१
साक्षात् मोक्षका कारण क्या है इस बातका निर्देश ---------- ३६१
साक्षात् मोक्षका कारण मिलने पर मुनि मुक्त होता है इस बातका निर्देश ---------- ३६१
दोनों प्रकारका तप संवर के साथ निर्जराका भी कारण है इस बातका समर्थन ---------- ३६१
किसके कितनी निर्जरा होती है ---------- ३६१
अधिकारी भेदसे उत्तरोत्तर असंख्यातगुणी निर्जराका विशेष खुलासा ---------- ३६१
निर्ग्रन्थोंके पाँच भेद ---------- ३६३
पुलाक आदि पदोंकी व्याख्या ---------- ३६३
ये पुलाकादि पाँचों किस अपेक्षासे निर्ग्रन्थ कहलाते हैं इसका कारण ---------- ३६३
निर्ग्रन्थों में संयम ादिकी अपेक्षा भेद कथन ---------- ३६४
संयमकी अपेक्षा भेद कथन ---------- ३६४
श्रुतीक अपेक्षा भेद कथन ---------- ३६४
प्रतिसेवनाकी अपेक्षा भेद कथन ---------- ३६४
तीर्थकी अपेक्षा भेद कथन ---------- ३६५
लिंगकी अपेक्षा भेद कथन ---------- ३६५
लेश्याकी अपेक्षा भेद कथन ---------- ३६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपपादकी अपेक्षा भेद कथन ---------- ३६५
स्थानकी अपेक्षा भेद कथन ---------- ३६५
दसवाँ अध्याय
केवलज्ञानकी उत्पत्तिके हेतु और कर्मक्षयका क्रमनिर्देश ---------- ३६७
मोहक्षयात् पदको अलग रखने का कारण ---------- ३६७
मोहका क्षय पहले क्यों और किस क्रमसे होता है... ---------- ३६७
क्षीमकषाय जीवके शेष ज्ञानावरणादि कर्मोंका क्षय... ---------- ३६७
कारणपूर्वक मोक्षका स्वरूप ---------- ३६८
कर्मके अभावके दो भेद ---------- ३६८
किन कर्मोंका अयत्नसाध्य अभाव होता है.... ---------- ३६८
यत्नसाध्य अभाव किस क्रमसे होता है इस बातका निर्देश ---------- ३६८
अन्य किन भावोंके अभावसे मोक्ष होता है.... ---------- ३७०
भवत्व पदको ग्रहण करनेका कारण ---------- ३७०
मोक्ष में किन भावोंका अभाव नहीं होता.... ---------- ३७०
मोक्षमें अनन्त वीर्य आदि का सद्भावख्यापन ---------- ३७०
मुक्त जीवों के आकार का शंका-समाधानपूर्वक प्रतिपादन ---------- ३७१
मुक्त जीव लोकाकाश प्रमाण क्यों नहीं होता.... ---------- ३७१
मुक्त जीव के ूपर लोकान्त गमनका निर्देश ---------- ३७१
ऊपर लोकान्तगमनमें हेतुओं का निर्देश ---------- ३७१
दृष्टान्तों द्वारा हेतुओं का समर्थन---------- ३७२
हेतुपूर्वक दृष्टान्तों का विशेष स्पष्टीकरण ---------- ३७२
ऊपर लोकान्तसे आगे गमन न करने का ाकरण ---------- ३७३
मुक्त जीवोंमें ७ेत्रआदिकी अपेक्षा भेद कथन ---------- ३७३
बेदकथन में दो नयोंका अवलम्बन ---------- ३७३
क्षेत्र की अपेक्षा भेद कथन ---------- ३७३
कालकी अपेक्षा भेद कथन ---------- ३७३
गतिकी अपेक्षा भेद कथन ---------- ३७३
लिंग की अपेक्षा भेद कथन ---------- ७३
तीर्थकी अपेक्षा भेद कथन ---------- ३७४
चारित्र की अपेक्षा भेद कथन ---------- ३७४
प्रत्येक बुद्धिबोधित की अपेक्षा भेद कथन ---------- ३७४
ज्ञान की अपेक्षा भेदकथन ---------- ३७४
अवगाहन की अपेक्षा भेद कथन ---------- ३७४
अन्तर की अपेक्षा भेद कथन ---------- ३७४
संख्या की अपेक्षा भेद कथन ---------- ३७४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्षेत्रादिकी अपेक्षा अल्पबहुत्व ---------- ३७४
सर्वार्थसिद्धि इस नाम की सार्थकता और महत्त्वप्रख्यापन ---------- ३७५
वीरजिनकी स्तुति ---------- ३७५
परिशिष्ट
परिशिष्ट-१ ---------- ३७६
परिशिष्ट-२ ---------- ३८९
परिशिष्ट-३ ---------- ४३०
परिशिष्ट-४ ---------- ४३१
परिशिष्ट-५ ---------- ४३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org